अध्याय

8

राजस्थान के लोक नृत्य और लोक नाट्य

लोक नृत्य – राजस्थान विविध कलाओं के साथ–साथ विभिन्न नृत्यों की भी रंगस्थली रहा है, इसलिए इसे रंगीला राजस्थान कहते हैं। सरल हृदय ग्रामीणों द्वारा आनन्द व उत्साहपूर्वक लय के साथ अंगों के संचालन को 'देशी नृत्य' कहते है। इन्हें 'लोक नृत्य' भी कहा जाता है।

लोक नृत्य में शास्त्रीय नृत्य की तरह ताल, लय आदि का सख्ती से पालन नहीं होता है। सामान्य जन द्वारा रचे गये लोक नृत्यों में मानव जीवन का सहज चित्रण होता है। लोकोत्सव, पर्व, तीज–त्यौहार, मेले व लोकानुष्ठान आदि अवसरों पर रंग–बिरंगी वेशभूषा और स्थान विशेष की परम्पराओं के अनुसार लोकनृत्य की परम्परा सदियों से चली आ रही है।

लोक नृत्यों पर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, सामाजिक बंधन इत्यादि का प्रभाव रहता है। सुप्रसिद्ध कला मर्मज्ञ एवं उदयपुर के लोककला मंडल के संस्थापक देवीलाल सामर ने राजस्थान के लोकनृत्यों को उनके प्रचलन वाले क्षेत्रों की भौगोलिक विशिष्टताओं के आधार पर तीन भागों में बांटा है– पहाड़ी, राजस्थानी तथा पूर्वी मैदानी।

कुछ लोकनृत्य राजस्थान के क्षेत्र विशेष की पहचान बन गये हैं। इनका वर्णन नीचे दिया जा रहा है–

गेर नृत्य

गेर मेवाड़ और बाड़मेर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य है। इसमें होली के अवसर पर पुरुष लकड़ी की छड़ियां लेकर गोल घेरे में नृत्य करते हैं। गोल घेरे में नृत्य के कारण इसे गेर तथा गेर करने वाले 'गेरिये' कहलाते हैं। मेवाड़ व बाड़मेर के गेर नृत्य की मूल रचना समान है। किंतु इनमें चाल व मण्डल बनाने की क्रिया में अंतर होता है। इस नृत्य में प्रयुक्त प्रमुख वाद्य ढोल, बांकिया और थाली है।

गींदड़ नृत्य

शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध गींदड़ नृत्य होली के दिनों में एक सप्ताह तक चलता है। नगाड़े की चोट पर पुरुष अपने दोनों हाथों में डण्डों को परस्पर टकराकर नृत्य करते हैं। यह विशुद्ध रूप से पुरुषों का नृत्य है। इस नृत्य में प्रयोग किये जाने वाले वाद्य यंत्र ढोल, डफ, चंग है। इसमें होली से संबंधित गीत गाये जाते हैं। कुछ पुरुष महिलाओं के वस्त्र पहनकर इसमें भाग लेते हैं, जिन्हें गणगौर कहा जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के स्वांग किये जाते है जिनमें साधु, शिकारी, सेठ–सेठानी, दूल्हा–दुल्हन, सरदार, पठान, पादरी, बाजीगर आदि प्रमुख हैं।

कच्छी घोड़ी नृत्य

'कच्छी घोड़ी' शेखावाटी तथा कुचामन, परबतसर, डीडवाना आदि क्षेत्रों का प्रमुख व्यावसायिक लोक नृत्य है। यह विवाह के अवसर पर किया जाता है। इस नृत्य में ढोल–थाली बजती है। नर्तक वीरोचित वेशभूषा धारण करके तलवार हाथ में लेकर काठ व कपड़े से बनी घोड़ी पर सवार होकर नृत्य करता है।

चंग नृत्य

यह शेखावाटी क्षेत्र में होली के दिनों में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। इस नृत्य में प्रत्येक

पुरुष चंग बजाते हुए वृत्ताकार नृत्य करते हैं। फिर घेरे के मध्य में एकत्रित होकर धमाल व होली के गीत गाते हैं।

डांडिया नृत्य

यह मारवाड़ का प्रसिद्ध नृत्य है जो होली के बाद किया जाता है। बीस, पच्चीस पुरुषों की एक टोली दोनों हाथों में डांडिया लेकर वृत्ताकार नृत्य करती है। मैदान में चौक के बीच में शहनाई और नगाड़े वाले तथा गवैये बैठते हैं। पुरुष लोक–ख्याल व होली गीत लय में गाते हैं। इन गीतों में प्रायः बड़ली के भैंरूजी का गुणगान होता है। राजा, बजिया, साधु, शिवजी, रामचन्द्र, कृष्ण, रानी, सिंधिन, सीता आदि विभिन्न प्रकार की वेशभूषाएं पहनी जाती हैं। राजा का वेश मारवाड़ के प्राचीन नरेशों से मिलता–जुलता होता है।

अग्नि नृत्य

जसनाथी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध 'अग्नि नृत्य' का उद्‌गम बीकानेर जिले के कतरियासर गांव में हुआ। इसके नर्तक 'जसनाथी संप्रदाय' के अनुयायी जाट सिद्ध कबीले के लोग हैं। इस नृत्य में केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। अंगारों के ढेर को 'धूणा' कहते है। नर्तक गुरू के सामने नाचते हुए 'फतैफते' कहते हुए धूणे में प्रवेश करते हैं। नर्तक अंगारों से मतीरा फोड़ना, हल जोतना, आदि क्रियाएं सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करते हैं। आग के साथ राग और फाग का ऐसा अनूठा संगम अन्यत्र दुर्लभ है।

घुड़ला

घुड़ला जोधपुर का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह केवल महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। इस नृत्य में स्त्रियां सिर पर एक छिद्रित मटके में जलता दीपक रखकर नृत्य करती हैं। इस मटके को घुड़ला कहा जाता है।

ढोल नृत्य

ढोल नृत्य जालोर का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह विवाह के अवसर पर माली, ढोली, सरगड़ा और भील जाति के पुरुषों द्वारा किया जाता है। इन व्यावसायिक नर्तकों को पहचान राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास ने दिलाई। इसमें एक साथ चार या पाँच ढोल बजाये जाते हैं। ढोल का मुखिया इसे थाकना शैली में बजाना शुरू करता है। थाकना समाप्त होते ही कुछ पुरुष अपने मुंह में तलवार लेकर, कुछ हाथों में डंडे लेकर, कुछ भुजाओं में रूमाल लटकाकर और अन्य लयबद्ध नृत्य करना प्रारंभ कर देते हैं।

बम नृत्य

बम नृत्य भरतपुर व अलवर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह नृत्य पुरुषों द्वारा फागुन की मस्ती व नई फसल आने की खुशी में किया जाता है। इसमें एक बड़े नगाड़े जिसे बम कहते हैं, को खड़े होकर दोनों हाथों में दो मोटे डण्डे लेकर बजाया जाता है। नगाड़े के साथ थाली, चिमटा, ढोलक आदि वाद्ययंत्र प्रयुक्त होते हैं।

घूमर

राज्य नृत्य के रूप में प्रसिद्ध घूमर मांगलिक अवसरों, पर्वों आदि पर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला लोकप्रिय नृत्य है। लहंगे के घेर को जो वृत्ताकार रूप में फैलता है 'घुम्म' कहते हैं। इसमें ढोल, नगाड़ा, शहनाई आदि वाद्यों का प्रयोग होता है। इस नृत्य में बार–बार घूमने के साथ हाथों का लचकदार संचालन प्रभावित करने वाला होता है।

गरबा

गुजरात और राजस्थान की संस्कृति का समन्वय गरबा में दिखाई देता है। डूंगरपुर व बांसवाड़ा में इस नृत्य का अधिक प्रचलन है। यह नवरात्रि में दुर्गा की आराधना में किया जाता है। गरबा तीन रूपों में

किया जाता है। प्रथम रूप शक्ति की आराधना का है जिसमें स्त्रियां मिट्टी के छिद्रित घड़े में दीपक प्रज्ज्वलित कर उसे सिर पर रखकर गोलाकार घूमती हुई नृत्य करती हैं। गरबा के दूसरे रूप रास नृत्य में राधा कृष्ण, गोप–गोपियों का प्रणय चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। तीसरे रूप में लोक–जीवन के सौन्दर्य को प्रकट करने वाले प्रसंगों, यथा– पणिहारी, नववधू की भावुकता, गृहकार्य में लीन स्त्रियों का चित्रण होता है।

वालर नृत्य

स्त्री–पुरुषों द्वारा किये जाने वाला 'वालर' सिरोही क्षेत्र के गरासियों का प्रसिद्ध नृत्य है। इस धीमी गति के नृत्य में किसी वाद्य का प्रयोग नहीं होता है। यह नृत्य अर्द्ध वृत्त में किया जाता है। दो अर्द्ध वृत्तों में पुरुष बाहर व महिलाएं अन्दर रहती हैं। नृत्य का प्रारम्भ एक पुरुष हाथ में छाता या तलवार लेकर करता है।

भवाई नृत्य

राजस्थान के व्यावसायिक लोकनृत्यों में 'भवाई' अपनी नृत्य अदायगी, शारीरिक क्रियाओं के अद्भुत चमत्कार तथा लयकारी की विविधता के लिए अत्यधिक लोकप्रिय है। तेज लय में विविध रंगों की पगड़ियों से हवा में कमल का फूल बनाना, सात–आठ मटके सिर पर रखकर नृत्य करना, जमीन पर रखे रूमाल को मुँह से उठाना, गिलासों व थाली के किनारों तथा तेज तलवार व काँच के टुकड़ों पर नृत्य आदि इसकी विशेषता है। यह उदयपुर क्षेत्र में शंकरिया, सूरदास, बोटी, ढोकरी, बीकाजी और ढोलामारू नाच के रूप में प्रसिद्ध है। रूपसिंह शेखावत, दयाराम, तारा शर्मा इसके प्रमुख कलाकार हैं।

तेरहताली नृत्य

कामड़ जाति तेरहताली नृत्य से बाबा रामदेवजी का यशोगान करती है। कामड़ स्त्रियां मेले व उत्सवों में तेरहताली का प्रदर्शन करती हैं। पुरुष साथ में मंजीरा, तानपुरा, चौतारा बजाते हैं। यह तेरह मंजीरों की सहायता से किया जाता है। नौ मंजीरे दायें पाँव पर, दो हाथों के दोनों ओर ऊपर कोहनी पर तथा एक–एक दोनों हाथों में रहते हैं। हाथ वाले मंजीरे अन्य मंजीरों से टकराकर मधुर ध्वनि उत्पन्न करते हैं। मांगीबाई और लक्ष्मणदास तेरहताली के प्रमुख नृत्यकार हैं।

क्या आप जानते हैं?

कालबेलिया नृत्य को 2010 में यूनेस्को द्वारा अमूर्त विरासत सूची में शामिल किया गया। इस नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना गुलाबो ने इसे देश–विदेश में पहचान दिलाई।

अन्य नृत्यों में नेजा, रमणी, युद्ध नृत्य, हाथीमना, घूमरा आदि भीलों के नृत्य हैं। घूमर, गौर, जवारा, मोरिया, लूर, कूद, मांदल आदि नृत्य गरासियों के द्वारा किये जाते हैं। इण्डोनी, पणिहारी, बागड़िया, शंकरिया, चकरी आदि कालबेलियों के नृत्य हैं। चरी, झूमर आदि गुर्जरों तथा मछली नृत्य बनजारों द्वारा किया जाता है। चकरी, धाकड़, कंजरों के तथा शिकार नृत्य सहरिया जनजाति का लोक नृत्य है। मावलिया कथौड़ी जनजाति का नृत्य है।

लोक नाट्य

लोक नाट्य की परम्परा बहुत पुरानी है। लोक नाट्य की कथाएं, संवाद व गीत लोकमानस में प्रचलित व उनकी रुचि के अनुरूप होते हैं। ये जनसामान्य के मनोरंजन के लिए उन्हीं के द्वारा मंचित किये जाते हैं। वर्तमान में ऐतिहासिक, पौराणिक व लोक कथाओं के साथ–साथ राजनीति, शासन व्यवस्था व

अद्यतन घटनाक्रम को भी इनके द्वारा व्यक्त किया जाता है।

राजस्थान के लोकनाट्य बहुरूपी और बहुरंगी हैं। अरावली के पर्वतीय क्षेत्र में भीलों, मीणों, बनजारों, सहरियों और गरासियों की रंगमयी संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। इनका प्राकृतिक परिवेश तथा देवी–देवताओं में आस्था जीवन्त नृत्यों, नाट्यों तथा रंगीन परिधान में डूबी संस्कृति का कारण है।

राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्रों में कठिन परिश्रम करने वाले लोगों के मनोरंजन का कार्य सरगड़ा, नट, मिरासी, भाट व भाण्ड नामक पेशेवर जातियों के लोग करते हैं। इनके वार्तालाप व्यंग्य विनोद प्रधान होते हैं।

अलवर, भरतपुर क्षेत्र के लोक नाट्यों में राजस्थान, हरियाणा और उत्तरप्रदेश की लोक संस्कृतियों का मिला–जुला रूप दिखाई देता है। धौलपुर, सवाईमाधोपुर आदि क्षेत्रों के लोक नाट्यों पर ब्रजभूमि की संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। राजस्थान में लोक नाट्यों के निम्नांकित रूप प्रचलित हैं–

ख्याल

ख्याल 18वीं सदी की शुरुआत से ही राजस्थान के लोक नाट्यों में शामिल थे। इन ख्यालों की विषय–वस्तु पौराणिक या वीराख्यान से संबंधित होती है, जिनमें ऐतिहासिक तत्व भी होते हैं। भौगोलिक अंतर के कारण इन ख्यालों ने विभिन्न रूप ग्रहण कर लिये है। इनमें भाषागत के स्थान पर शैलीगत भिन्नता पायी जाती है। इन ख्यालों में से कुछ की विशेषताएं निम्न प्रकार हैं–

(1) कुचामनी ख्याल

कुचामनी ख्याल का प्रवर्तन प्रसिद्ध लोक नाट्यकार लच्छीराम ने किया। ख्याल परम्परा में उन्होंने अपनी शैली का समावेश किया। लच्छीराम द्वारा रचित ख्यालों में से चाँद नीलगिरी, राव रिड़मल तथा मीरा मंगल प्रमुख हैं। उगमराज भी कुचामनी ख्याल के प्रमुख खिलाड़ी है। इस शैली की विशेषताएं निम्नांकित हैं–

(i) इसका रूप ऑपेरा जैसा है।

(ii) इसमें लोकगीतों की प्रधानता है।

(iii) इसका प्रदर्शन खुले मंच पर किया जाता है।

(iv) इनमें स्त्री चरित्रों का अभिनय पुरुष पात्रों द्वारा किया जाता है।

(v) इस ख्याल में संगत के लिए ढोल वादक, शहनाई वादक, ढोलक व सारंगी वादक मुख्य सहयोगी होते हैं।

(vi) इन ख्यालों की भाषा सरल होती है तथा सामाजिक व्यंग्य पर आधारित विषय चुने जाते हैं।

(3) शेखावाटी ख्याल

चिड़ावा निवासी नानूराम इस शैली के मुख्य 'खिलाड़ी' रहे हैं। उनके स्वरचित ख्यालों में प्रमुख हैं– हीर राँझा, हरीचन्द, भर्तृहरि, जयदेव कलाली, ढोला मरवण और आल्हादेव। इस लोक नाट्य शैली की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं–

(i) प्रभावी पद संचालन।

(ii) सम्प्रेषणीय शैली में भाषा और मुद्रा में गीत गायन।

(iii) वाद्य में प्रायः हारमोनियम, सारंगी, शहनाई, बाँसुरी, नक्कारा तथा ढोलक का प्रयोग होता है।

शेखावाटी इलाके में नानूराम के शिष्य दूलिया राणा के ख्याल बहुत लोकप्रिय हैं। गीतमय संवाद उनके ख्यालों को साहित्यिक तथा रंगमंच के अनुकूल बनाते हैं। दूलिया राणा के परिवार के लोग ही इन ख्यालों में होने वाले व्यय का वहन करते हैं।

(3) जयपुरी ख्याल

गुणीजनखाना के कलाकार जयपुरी ख्यालों में भाग लेते थे। इस ख्याल की कुछ निजी विशेषताएं है, जो इसे अन्य ख्यालों से भिन्न बनाती हैं, वे हैं–

(i) स्त्री पात्रों की भूमिका का निर्वहन स्त्रियां भी करती हैं।

(ii) इस ख्याल में नये प्रयोगों की अत्यधिक संभावनाएं हैं।

(iii) इसमें समाचार पत्रों, कविता, संगीत, नृत्य, गान व अभिनय का सुन्दर समावेश मिलता है।

(iv) इस शैली के कुछ लोकप्रिय ख्याल जोगी–जोगन, कान–गूजरी, मियाँ–बीबू, पठान, रसीली तम्बोलन आदि हैं।

(4) हेला ख्याल

हेला ख्याल दौसा, लालसोट व सवाईमाधोपुर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनाट्य है। इस ख्याल के प्रमुख प्रेरक शायर हेला थे। बम (बड़ा नगाड़ा) के प्रयोग के साथ इस ख्याल का प्रारम्भ होता है। साथ में नौबत बजाया जाता है। इस ख्याल की प्रमुख विशेषता 'हेला देना' (लम्बी टेर में आवाज देना) है।

(5) कन्हैया ख्याल

कन्हैया ख्याल करौली, सवाई माधोपुर, धौलपुर, भरतपुर व दौसा क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनाट्य है। इस ख्याल में कही जाने वाली मुख्य कथा को 'कहन' तथा मुख्य पात्र को 'मेड़िया' कहते हैं।

(6) तुर्रा कलंगी ख्याल

मेवाड़ के शाह अली और तुकनगीर नामक संत पीरों ने 400 वर्ष पूर्व तुर्रा कलंगी की रचना की। 'तुर्रा' को 'शिव' और 'कलंगी' को 'पार्वती' का प्रतीक माना जाता है। तुकनगीर 'तुर्रा' के तथा शाह अली 'कलंगी' के पक्षकार थे। इनके शिव–शक्ति संबंधी विचारों को लोगों तक पहुंचाने का मुख्य माध्यम काव्यमय रचनाएं थीं, जिन्हें 'दंगल' के नाम से जानते हैं। इसके संवादों को 'बोल' कहते हैं और ये काव्यत्मक होते हैं। तुर्रा कलंगी के सर्वप्रथम खेले गए ख्याल का नाम 'तुर्रा कलंगी का ख्याल' था। इसकी प्रकृति गैर व्यावसायिक है। इसमें 20 फुट ऊँचा रंगमंच बनाकर उसकी राजस्थानी शैली में भरपूर सजावट की जाती है। इस लोकनाट्य में दर्शक के भाग लेने की सर्वाधिक संभावनाएं होती हैं। इसमें चंग बजाया जाता है।

इस ख्याल के मुख्य केन्द्र घोसूण्डा, चित्तौड़, निम्बाहेड़ तथा नीमच (मध्य प्रदेश) हैं। इन स्थानों पर इस ख्याल के सर्वश्रेष्ठ कलाकार सोनी जयदयाल, चेतराम, हमीद बेग, ताराचंद तथा ठाकुर ओंकारसिंह आदि हैं।

गवरी

वादन, संवाद, प्रस्तुतिकरण और लोक–संस्कृति के प्रतीकों में मेवाड़ के भीलों की 'गवरी' अनूठी है। इसमें पौराणिक कथाओं, लोक–गाथाओं और लोक–जीवन की विभिन्न झाँकियों पर आधारित नृत्य नाटिकाएं होती हैं। गवरी एक धार्मिक लोकनाट्य है जो शिव भस्मासुर की कथा पर आधारित है।

रक्षाबंधन के दूसरे दिन भादवा कृष्णा एकम् को खेड़ा देवी से भोपा गवरी मंचन की आज्ञा लेता है। इसके बाद पात्रों के वस्त्र बनते हैं। पात्र मंदिरों में 'धोक' देकर नव–लाख देवी–देवता, चौसठ योगिनी और बावन भैंरू को स्मरण करते हैं। गवरी सवा महीने तक खेली जाती है। इस अवधि में शराब, माँस और हरी सब्जी का निषेध होता है। जिस गाँव से गवरी आरम्भ होती है वह इसका खर्च वहन करता है।

गवरी का मुख्य पात्र बूढ़िया भस्मासुर का जप होता है। 'राया' स्त्री रूप में पार्वती और विष्णु की प्रतीक होती है। झामट्या लोकभाषा में कविता पाठ करता है। खड़कड़्या उसे दोहराते हुए जोकर का काम करता है। बूढ़िया खट्कड़्ये के संवाद में पूरक बनता है। अन्य पात्र 'खेला' कहलाते हैं। गवरी में केवल पुरुष पात्र होते हैं। इसमें गणपति, भमरिया, भेआवड़, मीणा, कान–गूजरी, जोगी, खाड़लिया भूत, लाखा बणजारा, नटड़ी तथा माता और शेर के खेल होते हैं।

रम्मत

होली के अवसर पर जितने प्रकार के लोकानुरंजन राजस्थान में प्रचलित हैं उनमें 'रम्मत' का विशिष्ट स्थान है। रम्मत जैसलमेर, फलौदी तथा बीकानेर में मुख्य रूप से आयोजित होती है। इसमें राजस्थान के सुविख्यात लोक नायकों एवं महापुरुषों पर रचित काव्य रचनाओं को रंगमंच के ऊपर मंचित किया गया है। मनीराम व्यास, तुलसीराम, फागू महाराज, सूआ महाराज, तेज कवि (जैसलमेरी) आदि रम्मतों के प्रमुख रचयिता है। तेज कवि जैसलमेरी ने रम्मत का अखाड़ा श्रीकृष्ण कम्पनी के नाम से चालू किया। सन् 1943 में उन्होंने 'स्वतंत्र बावनी ' की रचना की और उसे महात्मा गाँधी को भेंट कर दी।

रम्मत की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता है– उसकी साहित्यिकता। इस व्यावसायिकता के युग में रम्मत आज भी सामुदायिक लोकनाट्य का रूप लिए हुए है। रम्मत की मूल ऊर्जा 'टेरिये' होते हैं। 'रम्मत' की मंच योजना खुले मोहल्ला या मंडी (बाजार के चौक) में होती है। बड़े–बड़े लकड़ी के पाटों पर राजा–रानी के बैठने के लिए छतरीनुमा सिंहासन बनाया जाता है। मुख्य मंच के चारों ओर दर्शक बैठते हैं। ऊँचे मंच पर वादक नगाड़ा, तबला, झांझ, चिमटा, तंदुरा, ढोलक, हारमोनियम आदि लेकर एक कोने में बैठते हैं। टेरिये के बोल के साथ पात्र नाचते हुए अपनी कला प्रदर्शित करते हैं।

बीकानेर की रम्मतों में आचार्यों की चौक की अमरसिंह राठौड़ की रम्मत, बिस्सों की चौक की चौबेल नौटंकी की रम्मत, कीकाणी व्यासों के चौक की जमनादास जी की रम्मत प्रसिद्ध हैं।

तमाशा

तमाशा जयपुर का प्रसिद्ध लोक नाट्य है। यह महाराजा प्रतापसिंह के काल में शुरू हुआ। भट्ट परिवार परम्परागत रूप से आज भी तमाशा का लोक मंचन करता है। फूलजी भट्ट, गोपीकृष्ण भट्ट व वासुदेव भट्ट इस परम्परा को जीवित रखे हुए हैं। 'गोपीचन्द' तथा 'हीर रांझा' मुख्य तमाशे हैं। तमाशे का आयोजन खुले मंच पर होता है, जिसे 'अखाड़ा' कहते हैं। संगीत, नृत्य और गायन, इन तीनों की तमाशे में प्रधानता होती है।

स्वांग

लोक–नाट्यों में 'स्वांग' की भी एक परम्परा है। स्वांग का अर्थ है किसी विशेष ऐतिहासिक, पौराणिक, लोक प्रसिद्ध या समाज में प्रसिद्ध चरित्र तथा देवी–देवताओं की तरह मेकअप करना व वेशभूषा धारण करना। स्वांग गाँवों में अधिक प्रचलित है। इसका कलाकार बहरूपिया कहलाता है। इस विलुप्तप्रायः कला का सबसे नामी कलाकार केलवा का परशुराम है। इसके प्रसिद्ध कलाकार जानकी लाल भांड (भीलवाड़ा) ने भारत उत्सवों में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया है।

क्या आप जानते हैं?

दूल्हे की बारात जब लड़की वाले के यहाँ चली जाती है, तब पीछे से वर पक्ष की महिलाओं द्वारा वर–वधू की नकल के रूप में जो स्वांग प्रदर्शित किया जाता है उसे टूंटिया, टूंटकी अथवा खोड़्या निकालना कहते हैं। इसमें एक महिला वर तथा दूसरी वधू बनती है तथा उनका नकली विवाह कराया जाता है। इसका एकमात्र उद्देश्य असली वर–वधू को आधि–व्याधि से मुक्त रखने की मनोकामना है।

लीला नाट्य

राजस्थानी लोकनाट्यों में लीला नाट्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है। रामलीला तथा रासलीला के अतिरिक्त लीलाओं के कुछ और रूप भी प्रचलित हैं, जैसे– रावलों की रामत, समया, गवरी, सनकादिकों की लीलाएं, गरासियों की गोर लीलाएं, रामलीला और कृष्ण लीला।

रासलीलाओं में श्रीकृष्ण के बाल्यकाल और किशोरावस्था की लीलाओं का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। फुलेरा, जयपुर, असलपुर, हरदोणा, गुण्डा आदि में रासलीला की अनेक मण्डलियां हैं। रामलीला का

मुख्य प्रयोजन भगवान राम के जीवन प्रसंगों का जीवन्त चित्रण है। इसके प्रस्तुतीकरण में भरतपुर, पाटूदा तथा बिसाऊ की अपनी अलग पहचान है। रामजीवन से संबंधित महत्वपूर्ण 'समयों' (अर्थात् समय) को इस नाट्यशैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें नृत्य, गीत एवं विभिन्न वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

गोर का आयोजन गरासियों द्वारा वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को 'भख्योर की गणगोर' के नाम से किया जाता है। इसमें लकड़ी की गोर एवं हँसर को गरासिया स्त्रियां अपने सिर पर रखकर नृत्य करती हैं। इनके बीच में पुरुष मुखौटा लगाकर तलवारबाजी का प्रदर्शन करता है।

सनकादिकों की लीलाएं राजस्थान में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन लीलाओं के प्रमुख अखाड़े घोसुंडा तथा बस्सी हैं। घोसुंडा में राधा–कृष्ण के युगल स्वरूप एवं रासादि लीलाओं का आयोजन किया जाता है। अवतारों के चेहरे विभिन्न प्रकार के मुखौटे धारण किए रहते हैं। बस्सी में ब्रह्मा, गणेश, कालिका, हिरण्यकश्यप, नृसिंहावतार आदि की झांकियां भी प्रदर्शित की जाती हैं।

नौटंकी

धौलपुर, करौली, अलवर, गंगापुर, भरतपुर तथा सवाईमाधोपुर में नौटंकी का खेल प्रचलित है। नौटंकी के नाटकों में रूप बसन्त, नकाबपोश, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, राजा भरथरी आदि प्रमुख हैं। प्रायः विवाह, सामाजिक समारोह, मेलों तथा लोकोत्सवों के मौकों पर इनका आयोजन करवाया जाता है।

चारबैंत

चारबैंत टोंक का प्रसिद्ध लोक नाट्य है। यह संगीत दंगल के रूप में खेला जाता है। इसका प्रारम्भ टोंक के नवाब फैजुल्ला खाँ के शासनकाल में करीम खाँ निहंग द्वारा किया गया। इस लोक नाट्य में गायक डफ बजाता हुआ घुटनों के बल खड़े होकर गाकर अपनी बात कहता है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न –

1. गींदड़ नृत्य का संबंध किस क्षेत्र से है?
   (अ) मेवाड़ (ब) मारवाड़
   (स) शेखावाटी (द) बाड़मेर
2. कच्छी घोड़ी नृत्य किस अवसर पर किया जाता है?
   (अ) होली (ब) विवाह
   (स) तीज (द) नवरात्र
3. ढोल नृत्य किस जिले से संबंधित है?
   (अ) जालोर (ब) सीकर
   (स) जयपुर (द) प्रतापगढ़
4. लच्छीराम का संबंध किस लोक नाट्य से है?
   (अ) शेखावाटी ख्याल (ब) कुचामनी ख्याल
   (स) जयपुरी ख्याल (द) हेला ख्याल
5. चारबैंत कहाँ का प्रसिद्ध लोक नाट्य है?
   (अ) दौसा (ब) टोंक
   (स) जैसलमेर (द) कोटा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'स्वांग' से आप क्या समझते हैं?
2. 'तमाशा' लोक नाट्य किसके शासनकाल में प्रारम्भ हुआ था?

3. महात्मा गाँधी को 'स्वतंत्र बावनी' की प्रति किसने भेंट की थी?
4. हेला ख्याल किस क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नाट्य है?
5. तेरहताली नृत्य किस लोक देवता की आराधना में किया जाता है?
6. गेर नृत्य में कौनसे वाद्य यंत्र प्रयुक्त होते हैं?
7. अग्नि नृत्य किस सम्प्रदाय से संबंधित है?
8. भवाई नृत्य के प्रमुख कलाकारों के नाम लिखिये।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. घूमर नृत्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
2. भवाई नृत्य के दौरान प्रदर्शित विभिन्न शारीरिक क्रियाओं का वर्णन कीजिये।
3. चारबैंत लोक नाट्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
4. नौटंकी का खेल राजस्थान के कौन से क्षेत्र में अधिक प्रचलित है? यह किन अवसरों पर आयोजित किया जाता है?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. राजस्थान के विभिन्न लोक नृत्यों पर एक विस्तृत लेख तैयार कीजिये।
2. 'ख्याल' लोकनाट्य का वर्णन करते हुए इसकी मुख्य विशेषताएं बताइये।
3. विभिन्न लीला नाट्यों की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

परियोजनात्मक कार्य :

विभिन्न नृत्यों एवं उनसे जुड़े स्थानों व अवसरों को एक सारणी के रूप में दर्शाते हुए चार्ट का निर्माण कीजिये।

कल्पना करें :

1. आप स्वांग लोक नाट्य के कलाकार हैं, आप एक सप्ताह के लिए कौन–कौन से स्वांग धरेंगे, उनकी सूची बनाये।